राज कॉमिक्स

मूल्य 10.00 रुपए

शैतान की शादी

भोकाल

इस कॉमिक्स के साथ
शैतान का एक स्टीकर मुफ्त और
इसी सेट की सभी छः कॉमिक्स खरीदने
पर नागराज की एक नई कॉमिक्स
नागराज का सफर
मुफ्त

भोकाल सीरीज

PRATAP MULICK

शूलान की शादी

लेखक : संजय गुप्ता
चित्र : जसवंत सिंह नार
संपादक : मनीष गुप्ता
सुलेख : आलोक जैन

पींइइईSSग..इग्इ

उफ! तो यह है वह बला, जो कि नगर में बच्चे गायब होने वाली घटनाओं की जिम्मेवार है।

बांसुरी की मधुर धुन बिखेरती निरंतर बढ़ी जा रही थी वह –

वां हूं हूं ऽऽऽऽ....

उस मधुर धुन से बंधे बच्चे मस्त नृत्य करते उसके पीछे चले जा रहे थे –

और बढ़ रहा था शूतान –

देखूं तो सही यह चुड़ैल इन बच्चों को आखिर कहां ले जा रही है ?

एक पहाड़ी के सम्मुख पहुंच उसकी बांसुरी के स्वर बदले।

पीं ई ई ऊं ऊं ई पूं ई ई

फलस्वरूप पहाड़ी में नजर आया एक गुफा द्वार –

पीं ई ई ऊं ऊं ई पूं ई ई

सभी नृत्य करते बच्चों के साथ वह गुफा में समा गई।

इसी के साथ पहाड़ी में नजर आता वह गुफा द्वार बंद होता चला गया।

शूतान के पास केवल हाथ मलने के और कुछ ना रह गया !

उफ ! चली गई बच्चों को भी ले गई

गुफा में जाते ही उसकी बांसुरी के स्वर और तीव्र होते चले गए !

पिपी पिपी पिपी पीं !

गुफा यकायक तेज प्रकाश से भर उठी !

एक खूंखार चेहरे का दानवाकार राक्षस प्रकट हुआ -

स्वागत वेणु ! स्वागत करता है पटका तुम्हारा !

बच्चों की आंखें आतंक से फट पड़ी थीं व जुबानें तालू से चिपक गई थीं !

जादूगर भाड़झोंक तुमसे बहुत प्रसन्न है ! ऐसे ही और बच्चे एकत्रित कर भेजती जाओ !

हाथ बढ़ाकर पटका ने बच्चों को दबोच लिया -

बांसुरी के स्वर थम चुके थे !

पटका ने विदा ली वेणु से !

तीव्र गड़ गड़ाहट सुनकर उछला शूतान –

गड़ गड़ sssss...

लगता है वह वापस लौट रही है!

वेणु बाहर निकली गुफा से, और एक ओर चल पड़ी –

काफी दूर तक पीछा करना पड़ा शूतान को –

अपना घूंघट हटाया उसने !

...न..नहीं, परी है यह तो !

उफ! रुकी तो सही चुड़ैल।

एक सुन्दर पहाड़ी झरने के पास पहुंचकर रुकी वेणु।

झरने से निकल वस्त्र धारण किए उसने।

नहाने के लिए झरने में उतर गई वह –

अति सुन्दर!

शूतान पर उसका रूप जादू कर गया था –

अतीव सुंदरी! मेरे सपनों की राजकुमारी हो तुम!

एक चट्टान पर बैठकर वेणु ने अपनी बांसुरी अधरों पर रखी और बजाने लगी।

पीं ई.. ई ई.. ई ऽऽऽ

ना जाने क्या था इस धुन में।

नाचने पर मजबूर हो गया शूतान।

यह..य.यह क्या हो रहा है मुझे?

पींई पिंपणीं पिंपणीं

बहुत चाह कर भी खुद को ना रोक पाया वह।

और नाचता हुआ वेणु के सामने आ खड़ा हुआ –

पींइ ई पिंपणीं पिंपणीं...

कुछ क्षण पश्चात् ही रुकी वह धुन।

और रुके कदम शूतान के –

सम्मोहन सम्राट शूतान को अपनी मधुर धुन पर सम्मोहित कर देने वाली सुन्दरी कौन हो तुम?

उसकी धुन की तरह ही मधुर थे उसके स्वर भी –

वेणु नाम है मेरा, और काम है बच्चे चुराना! किन्तु यह सब जानकर अब तुम जिन्दा ना बच सकोगे!

उछलकर खड़ी हुई वेणु ने प्रहार किया उस बांसुरी का, जो अब भयंकर गंडासे में बदल चुका था –

बाप रे! मैं इसकी असलियत तो भूल ही गया था!

बिजली की सी फुर्ती से वार कर रही थी वह –

संभलने का मौका न मिल पा रहा था शूतान को!

और मौका मिलते ही शूतान ने किया सम्मोहन शक्ति का इस्तेमाल –

जड़ होकर रह गई वेणु वहीं की वहीं –

हां, अब सही है! बोलो हमारी आज्ञा मानोगी या नहीं?

हां, मानूंगी!

शूतान के पूछने पर जो कुछ उसने बताया उसे सुन शूतान का हृदय तक कांप उठा –

... और वह शैतान जादूगर भाड़झोंक अब किसी भी क्षण मुझे वापस बुला लेगा, क्योंकि वह मुझ पर हर वक्त नजर रखता है!

तभी आकाश से प्रकट हुआ तेज रोशनी का दायरा!

जिसने समेट लिया वेणु को अपने अंदर –

छोड़ेगा वह तुम्हें भी नहीं, क्योंकि तुम उसके बारे में जान चुके हो!

शूतान के देखते ही देखते गायब हो गई वेणु!

तिलिस्मा में भोकाल व तुरीन को सुनाया शूतान ने सारा किस्सा-

वह खतरनाक जादूगर भाड़झोंक उन बच्चों के रक्त से तैयार कर रहा है रक्तासुर, एक महाशक्ति राक्षस।

दुस्वांत ग्रह के इस जादूगर को अब हम रोकें भी कैसे?

हमें अब उसके अगले कदम का इंतजार करना होगा।

दुस्वांत ग्रह पर जादूगर भाड़झोंक भी था अत्यंत क्रोध में -

अब तुम पृथ्वी पर जाओगी भोंका, गुर्रा और दहाड़ा के साथ कत्ले-आम मचाने।

अब मैं ज्यादा इंतजार नहीं कर सकता वेणु! रक्तासुर को पूर्ण शक्ति रूप होने के लिए चाहिए केवल दस हजार बालकों की बलि।

और इस दिव्य शक्ति रूप में।

भोंका, गुर्रा व दहाड़ा के साथ पृथ्वी पर प्रकट हुई वेणु नए शक्ति रूप में –

वेणु, गुर्रा, भोंका और दहाड़ा की विकास-नगर वासियों को एक चुनौती !

हमें चाहिये दस हजार बालक...

या तो शांति से हमारे हवाले कर दो...

... नहीं तो हम मचा देंगे यहां तबाही !

विकासनगर के चप्पे-चप्पे पर फैल गई यह खबर-

चार शैतान आ गए हैं विकास नगर में।

बहुत भयानक बताए जाते हैं।

हां, किन्तु उनकी सगाना वेणु अप्रतिम सुन्दरी है।

उन्होंने हमसे हमारे बच्चे मांगे हैं।

क्या वे अपनी चेतावनी पूरी कर दिखाएंगे?

जरूर कर दिखाएंगे। पर अपने जिगर के टुकड़े भला उन्हें कौन सौंप देगा

हमें जरूरत भी ना पड़ेगी। भोकाल, शूतान व तुरीन जो हैं हमारी रक्षा करने के लिए।

हां, यह सही है।

हां, हम क्यों डरें।

तैयार हो चुके थे वे तीनों भी-

हमें उन शैतानों का हर आक्रमण विफल करना है!

नगर के एक हिस्से पे हवा में तैरता भोंका नज़र आया -

विकासनगर वासी अपनी जिंदगी के सबसे बड़े हादसे से टकराने जा रहे हैं !

अग्नि लपट बढ़ चली इमारत को लीलने के लिए !

भोंकाल के देखते-देखते इमारत घिर गई भयंकर ज्वालाओं में -

हे महागुरु भोंकाल ! यह क्या हुआ ?

उसने अभी शायद हवा में उड़ते भोंका को देखा नहीं था !

वह दिखा, इमारत में फंसे लोगों की तरफ बढ़ता हुआ -

बचाओ बचाओ बचाओ

हा-हा-हा अगर घर में मौजूद दो-चार बच्चे हमें दे देते तो इस तबाही का सामना न करना पड़ता !

अपनी विशाल तलवार को लोगों के खून से तर करता वह इमारत में घुसा -

और बच्चे तो अभी भी जायेंगे ही !

आह!

ईऽऽऽऽ

बच्चों को दबोचकर पलटा शैतान -

इस तबाही से घबरा कर कल जरूर नगरवासी सारे बच्चे खुद हमें सौंप देंगे !

किन्तु तभी उसके मुंह से टकराई एक लात -

आह

महाबली भोकाल ने ललकारा था भोंका को -

शैतान भोंका बच ना सकेगा इस शैतानी हरकत के बाद अब तू!

वाह! भोकाल अब हम बच जायंगे!

अप्रत्याशित रूप से घूमी भोंका की तलवार-

पृथ्वी पर किसी की इतनी हिम्मत कि वह भोंका की हरकतों को रोके!

किन्तु उतनी ही शक्ति व फुर्ती से वापस लौटा वह-

इस पर वार करते हुए मुझे इन बच्चों का भी ध्यान रखना है कि ये ना घायल हो जायं!

वार की शक्ति से दूर तक उछल गया भोकाल -

उफ! इसकी शक्ति व फुर्ती को कम आंका मैंने!

भोकाल की तलवार ने भोंका के लहू का स्वाद चखा -

और अब भोंका भोकाल को उछाल ना पाया -

भोंका! विक्रमनगर की तरफ उठे तेरे इन हाथों को काट गिराऊंगा मैं!

अब तू नहीं बच पायेगा भोंका!

बहुत गलती की यूं आसानी से भोंका की तरफ बढ़कर भोकाल ने।

आग का तूफान उगल दिया भोंका की तलवार ने उस पर -

जादूगर भाड़झोंक के सेवकों ने हार का मुंह देखना नहीं सीखा !

झुलस गया भोकाल उन ज्वालाओं में -

ढाल आगे करने में यदि उसने उस क्षण देरी कर दी होती तो अनर्थ हो जाता !

उफ ! कैसा भयंकर आग का तूफान है!

तलवार की धार से टकराकर फिसलती हुई ज्वालाएं बढ़ चलीं भोंका की ओर-

ढाल पर पड़ती ज्वालाओं का रुख उसने अपनी तलवार की धार की ओर किया !

मेरा यह वार ना सह पायेगा यह शैतान!

उफ!

आह!

अपने भयंकर दांतों को किटकिटाता क्रोधित भोंका भोकाल की ओर लपका -

भोंका अपने बाहुबल से तुझे मृत्युलोक पहुंचायेगा!

निहत्थे हो चुके भोंका से लड़ने के लिए भोकाल ने भी अपनी तलवार म्यान में डाल ली!

बाहुबल भी परख के देख ले शैतान!

दांत कितने भयंकर हैं इसके, इनसे बचना होगा।

अब उसकी ढाल पीठ पर बंधी हुई थी जिसके सहारे वह उड़ रहा था !

एक जबरदस्त मुष्टि प्रहार किया भोकाल ने और-

यह गया तेरा जबड़ा बाहर!

धाड़

तभी भयंकर दांत टूट गए भोंका के।

अगला प्रहार किया उसने भोंका के कंधे पर-

भाड़!

भोकाल चाचा! पहले हमें बचाओ, कहीं इसका कच्चा ना उतर जाए।

उसके कंधे की हड्डी टूट गई।

दूसरा कंधा भी लटक गया जब तब भोंका ने हार मान ली-

तुम वाकई महावीर हो!

और तभी गायब हो गया भोंका-

उसी वक्त नगर के दूसरे कोने में-

गुरु का हुक्म नहीं माना इस नगर के वासियों ने!

बुरे का भला चल पड़ा-

जा भाले! अपनी शक्ति दिखा के आ!

धरती से टकराते ही एक भयंकर कम्पन उत्पन्नहुई -

यह क्या बला है ?

कम्पन बढ़ती गई इतनी बढ़ी कि धरती का सीना कागज की भांति फटता चला गया -

धररराक

आह!

आह!

धरती के गर्भ में समा गए जीते- जागते कई इंसान-

उफ! इस एक भले ने कितनी जानें ले लीं!

किसका कुकृत्य है यह?

गुर्रा का ठहाका बन गया उनके प्रश्नों का उत्तर -

हा-हा-हा-हा

शैतान गुर्रा है यह तो।

कल तक यदि हर घर से बच्चा ना भेजा गया तो इससे भी भयंकर मौत नसीब होगी तुम लोगों को।

वहां से चल पड़ा गुर्रा!

चार बालक खेलने के लिए बढ़ रहे थे उस मैदान की तरफ -

तभी आकर गड़ गया वह भाला उनके आगे-

आऽऽ

आईऽऽ

मइया रीऽऽ

धरती फटी और नन्हें पैर लड़खड़ा गए-

मौत की गहराइयों की तरफ लुढ़क गए चारों मासूम-

आऽऽऽऽऽऽ

बिजली सी चमकी और नजर आई तुरीन-

चल कपाला ! इन बच्चों का बाल भी बांका ना होने पाए।

सब कुछ हो गया कुछ ही पलों में -

इस शैतान गुर्रा की सारी गुर्राहट समाप्त करती हूं अभी !

उसके निकलते ही धरती ने अपने जबड़े समेट लिए !

गुर्रा तो हैरान खड़ा था तुरीन की इस फुर्ती को देखकर

तुरीन को अपनी तरफ पलटता देख गुर्रा चेता -

लड़की, तुझे तेरी गुस्ताखी की भयंकर सजा दूंगा मैं !

एक तरफ छलांग लगाकर बचा ले गई कपाला तुरीन को -

भाले से विद्युत किरणें फूट पड़ीं -

ये किरणें तेरे शरीर को मक्खन की तरह पिघला देंगी।

तुरीन के हाथ से निकली किरणें टकरा गईं उन विद्युत किरणों से -

मेरी शक्ति को बहुत कम आंक रहा है यह।

बराबर का मुकाबला लग रहा था।

किन्तु गुर्रा ने अपनी विद्युत किरणों की शक्ति बढ़ानी शुरू की -

उफ! यह शक्ति बढ़ा रहा है। इस तरह तो मैं हार जाऊंगी।

यह बात गुर्रा भी ताड़ गया था -

हा-हा-हा! मैं उतनी शक्ति बढ़ा दूंगा कि इसकी चटनी भी ना मिलेगी!

कोई भी पल तुरीन की पराजय का पल बन जाता!

कि तभी प्रहारा से फूट पड़ीं ज्वालाओं ने गुर्रा की तरफ मुंह पसारा-

और गुर्रा के मुंह से फूट निकली अंतिम चीत्कारें -

इ..हु..

ह..हाय

तुरीन ने ली चैन की सांस -

उफ! एक बार तो लगा कि आखरी समय आ गया है!

तभी आकाश से प्रकट हुए रोशनी के दायरे में गायब हो गया गुर्रा का जिस्म-

उस शाम राजदरबार में -

महाराज! इतने बड़े विकासनगर में हम हर वक्त हर जगह तो नहीं रह सकते!

और हमारे पहुंचने तक शैतान कहीं ना कहीं अपनी शैतानी दिखा जाते हैं।

क्यों ना हम विकासनगर के सभी बच्चों को राजमहल में एकत्रित कर लें जिससे हम उनकी पूर्ण सुरक्षा कर सकेंगे!

यह बिल्कुल ठीक रहेगा भोकाल!

संबंधित अधिकारियों को जरूरी आदेश दे दिए गए।

अगली सुबह विकासनगर का प्रत्येक बच्चा राजमहल के विशाल मैदान में मौजूद था

जिनकी सुरक्षा के लिए तैनात थे सुरक्षा सैनिक...

...व महाबली भोकाल, शूतान और तुरीन -

बच्चो ! अब तुम सुरक्षित हो। कोई भी तुम्हारा अहित ना कर पाएगा!

तभी आकाश में प्रकट हुए वेणु व दहाड़ -

हमारा काम बहुत आसान कर दिया आप लोगों ने।

दहाड़ के पंजों से निकली शीत किरणें -

अब ये सब दूरवांतग्रह भेज दिए जाएंगे।

बच्चे कैद हो गये बर्फ के गोले में !

दहाड़ा के हाथ तेजी के साथ चलने लगे -

हा-हा-हा-हा शिकार करने में कितना मजा आ रहा है।

महाबली भोकाल के सामने ऐसा खौफनाक खेल कैसे हो जाए भला !

उसने दहाड़ा को ललकारा-

शिकार का असली मजा लेना है तो मुझसे लड़ शैतान।

दहाड़ा के हाथ से निकली शीत किरणें -

ले..तू भी हो गया शिकार।

बर्फ के गोले में कैद हो गया वह।

लेकिन महाबली भोकाल को कैद करना आसान कहाँ था -

भोSSS काSSS लSSS

सुरक्षा प्रहरियों ने वेणु व दहाड़ा पर बाण वर्षा की-

स्यांय स्यांय

वेणु के गंडासे से निकला मौत का दूसरा-

पलों में ही सभी प्रहरी मौत की नींद सो गए।

नीचे उतर आये दोनों -

पहले तुम तीनों को ही समाप्त कर देते हैं।

दहाड़ा से भिड़ गया भोकाल

समाप्त अगर कोई होगा तो वो तुम होगे दहाड़ा!

टनाक

उसका वार रोका दहाड़ा ने अपनी बाजू पर लगे तेज धार फल पर।

वेणु टूट पड़ी तुरीन पर-

तू मुझसे बच ना सकेगी लड़की अब।

शूतान के रहते ऐसा हरगिज नहीं हो सकता!

तो पहले तुझसे ही निपट लेती हूं बेवकूफ बालक!

फुर्ती से पलटकर शूतान की तरफ खोल दिया उसने मौत के तूफान का मुंह-

हांय! बेवकूफ और बालक मैं!

हां और गधा भी!

आंय गधा भी!

उस मौत के तूफान को काटा तुरीन के प्रहारा ने -

हममें से किसी को भी मौत बांटना इतना आसान कहां है!

धन्यवाद तुरीन!

अब चला शूतान का जादू -

तुरीन! अब तुम एक तरफ खड़ी होकर देखो मेरा कमाल!

अगले ही पल वेणु के चेहरे के रंग बदल गए -

हा-हा-हा

मेरे मालिक आज्ञा दें दासी को। आपका हुक्म सिर आंखों पर।

तब शूतान ने जो आदेश दिया वही वेणु ने किया -

तेरी मौत आ गई क्या दहाड़ा, जो मेरे मालिक के मित्र से लड़ रहा है?

उफ!

एक ही प्रलयंकारी प्रहार ने हुर लिए दहाड़ा के प्राण -

ले मर!

आह ssss

शूतान के इस कमाल पर बच्चा-बच्चा अचंभित था।

दहाड़ा को समाप्त करने के पश्चात् उसने बर्फ के गोलों में कैद बच्चों को स्वतन्त्र कराया -

अब इसको क्या करोगे शूतान?

अब मैं इससे शादी करूंगा।

शूतान के इस जवाब से अचंभित रह गए भोकाल व तुरीन।

तभी आकाश में नजर आया रोशनी का दायरा -

लो इसके लिए जादूगर भाड़झोंक को बुलावा आ गया !

रोको, इसे रोको तुरीन, तुम रोक सकती हो इसे।

प्रहारा से निकली किरणें टकराईं रोशनी के उस दायरे से जो वेणु की तरफ बढ़ रहा था -

वि.चा.श

दूसरे दायरे में नहाकर गायब हो गया दहाड़ा का शरीर।

कुछ देर बाद राजमहल के एक कक्ष में उपस्थित थे वे -

वेणु ! अब तुम किसी सम्मोहन में नहीं हो। मैं प्रोकावासी महान मैस्मर का पुत्र शूलान तुम्हारे रूप पर मोहित होकर तुमसे विवाह रचाना चाहता हूं। बोलो, तुम राजी हो ?

क्या तुम मेरे बारे में सब - कुछ जानते हो ?

इतना कि तुम दुखांतग्रह के किसी दुष्ट जादूगर भाड़झोंक के लिए बच्चे चोरी करती हो। जो कि अब से तुम छोड़ दोगी।

और यह जानने के बाद कि जादूगर भाड़झोंक मेरे पिता हैं।

स्तब्ध रह गए सभी।

किन्तु शूतान ने तो मन में कुछ ठान रखी थी -

हां, तब भी अगर तुम वायदा करो कि आज के बाद सभी बुरे कार्यों को छोड़ दोगी।

सभी हैरान थे शूतान का जवाब सुनकर।

और वेणु तो रो ही पड़ी उसके इस फैसले पर -

बू-ऊ-ऊ-ऊ! मुझ जैसी बुरी लड़की को भी तुम अपनाने को तैयार हो शूतान, तुम महान हो! आज से वेणु तुम्हारी हुई। मैं वायदा करती हूं सभी बुरे कार्य छोड़ने का।

सभी की आंखें नम हो गईं वेणु का हृदय परिवर्तन देख।

महाराज विकासमोहन ने वेणु का हाथ शूतान के हाथ में थमा दिया।

पुत्र शूतान! तांत्रिक टिल्लू इसे आज ही वृंदावनिया यज्ञ से पवित्र कर देंगे। फिर हम कल तुम दोनों का विवाह करा देंगे।

आहि-आहि मची हुई थी दुखांत ग्रह पर जादूगर भाड़झोंक के हृदय में -

महान जादूगर भाड़झोंक की पुत्री का अपहरण कर लिया पृथ्वीवासियों ने।

मेरी पुत्री वेणु, जिसका विवाह मैं महान राक्षस पटका से करना चाहता था, उसका विवाह एक तुच्छे इन्सान से हो रहा है।

महा पिशाच रक्तासुर का यज्ञ अधूरा रह गया। यह सब पृथ्वीवासियों के कारण हुआ...

अब मैं परिवर्तन करूंगा इस यज्ञ में। पटका को रक्तासुर का शरीर दूंगा!

यज्ञ आरम्भ किया जादूगर भाड़झोंक ने-

असुर-असुर रक्तासुर! अटका मटका, पटका रक्तासुर!

रक्तासुर के शरीर में हरकत हुई-

और पटका के शरीर पर छा गया रक्तासुर का शरीर-

गरज उठा जादूगर भाड़झोंक -

चलो पटका! पृथ्वीलोक, हमें बदला लेना है और तुम्हारा विवाह वेणु से होना है!

अगले ही पल दोनों के जिस्म हवा में विलीन हो गए-

चलिये महास्वामी, मेरी ताकत से ना टकरा पायेंगे वे और मैं छुड़ा लाऊंगा वेणु को उनके चंगुल से!

विकासनगर की प्रजा व देश-विदेश के मेहमानों से भरा पड़ा था शूतान व वेणु के विवाह का मंडप-

आज के इस शुभ-मुहूर्त पर मैं तांत्रिक टिल्लू, शूतान व वेणु वृंदावनिया के विवाह की घोषणा करते हुए अपार हर्ष महसूस कर रहा हूं।

तांत्रिक टिल्लू की गरजदार आवाज गूंज रही थी-

वृंदावनिया यज्ञ के पश्चात पुत्री वेणु सभी प्रकार से पवित्र हो चुकी है, इसीलिये अब इसका नाम वेणु वृंदावनिया रखा गया है।

विवाह करवा रहे महर्षि पोपा टोपा की आवाज गूंजी-

वर एवं वधु वरमाला के लिए खड़े हो जाएं।

तभी मण्डप का शामियाना फाड़ता प्रकट हुआ पटका-

ठहरो वेणु! तुम्हारा विवाह मुझसे होगा।

चर्र्र्र

उसके पीछे जादूगर भाड़झोंक -

हा बेटी, तुम्हारी शादी इस दुच्चे इंसान से नहीं होगी।

मैं दुच्चा..

फुंफकार उठी वेणु-

मेरा विवाह शूतान से ही होगा पिताजी। आप कृपया वापस लौट जाएं।

नहींऽऽ

इस दुच्चे इन्सान को तो मैं अभी मृत्यु-लोक पहुंचा देता हूं।

ससुर जी! मैं दुच्चा इंसान नहीं हूं।

बिजली की सी फुर्ती से घुमा जादूगर भाड़झोंक का हाथ-

टनाक

ये देख, इस ससुरजी के फरसे का वार!

वेणु वृंदावनियां के गंडासे का फल-

शूतान मेरा परमेश्वर है और उससे टकराने वाले हाथ काट फेंकेगी वेणु!

ओह! पिता पर हाथ उठाया तूने नालायक!

क्रोध से बिफर उठा भाड़झोंक -

तेरा मेरा रिश्ता खत्म हुआ आज से। तेरा व इस टुच्चे का अन्त अब मेरे हाथों से होगा

भाड़झोंक ने भयंकर किरणें झोंक दीं वेणु की तरफ।

जिन्हें काट दिया तांत्रिक टिल्लू की शक्ति किरणों ने -

तांत्रिक टिल्लू के रहते वेणु को कोई नुकसान ना पहुंचा पाओगे भाड़झोंक।

इससे पहले कि तांत्रिक टिल्लू फिर वार करता-

चिल्ला उठा शूतान -

ना,ना, ना बस, तांत्रिक टिल्लू, अब ससुरजी को मैं सबक सिखाऊंगा आप पीछे हट जाइए।

शूतान ने संभाला जादूगर भाड़झोंक को -

क्यों भई, मैं तुझे टुच्चा दिखता हूं।

शूतान ने सम्मोहन प्रक्रिया शुरू की।

किन्तु उससे पहले ही चीख उठा भाड़झोंक-

पटका! तबाही मचा दे यहां!

उग्र हो उठा अब तक शांत खड़ा राक्षस पटका -

धुम्म ह्ह्ह्ह...

खून उगल दिया उसके हाथों ने।

और जिस पर भी वह खून पड़ा-

उसी क्षण कंकालों में तब्दील हो गया वह

ऐसा हौलनाक दृश्य देख नस-नस फड़क उठी भोकाल की -

शैतान पटका! रोक इस दरिंदगी को, वरना भोकाल तुझे बहुत भयंकर मौत देगा!

हर तरफ मच गई थी भगदड़ व चीखों की पुकार।

तत्क्षण महाबली भोकाल में परिवर्तित हो गया वह -

भोकाल

तुरीन भी पीछे ना रह सकी -

चल कपाला

पटका के हाथ से छूटी लहू की धारें-

पटका तक पहुंचने से पहले ही तू कंकाल बन जायेगा!

ठीक कह रहा है। लहू की एक बूंद भी मुझे कंकाल बना देगी

भोकाल की ढाल से टकरा कर लहू धरती पर फैल गया।

तभी पटका के जिस्म से टकराई तुरीन की शक्ति किरणें

भोकाल की तलवार नहीं, किन्तु मेरी शक्ति किरणें तो तुझ तक पहुंच सकती हैं शैतान!

किन्तु पटका का कुछ ना बिगाड़ पाईं वे किरणें-

प्लटकर पटका ने किया वार-

बचो तुरीन! यह लड्डू तुम्हें अभी कंकाल में बदल देता।

बचा लिया भोकाल ने तुरीन को।

दोनो ने बनाई एक योजना-

प्रहारा का वार इसके जिस्म के लहू को सोख लेगा।

उफ! आह!

प्रहारा की प्रबल विनाशकारी किरणें सोखने लगी उसके शरीर पर छाये रक्तासुर के लहू को-

कुछ ही पलों में पटका के शरीर से उतर गया रक्तासुर के लहू का आवरण-

पटका अभी भी तुम्हें दोजख पहुंचा सका।

किन्तु जब भोकाल की तलवार पहुंच गई उसकी गर्दन तक-

हाय

भोकाल की तलवार के रहते दोजख मिलेगी केवल शैतानों को।

पटका की लीला समाप्त हो गई।

तभी स्वर गूंज उठा शूतान का -

लो भई, हमारे दुष्ट ससुरजी भी राजी हो गये हमारी शादी के लिए। क्यों ससुरजी!

हां-हां क्यों नहीं, शूतान जी!

एक बार फिर वहां का माहौल खुशियों से भर उठा -

दोनों का विवाह सम्पन्न हुआ।

किन्तु कब जादूगर भड़झोंक का सम्मोहन टूटा और कब वह गायब हो गया इस तरफ किसी का ध्यान ना गया -

मैं हार चुका हूं! बाजी मेरे हाथ से निकल गई है अब दुरात्मा-गृह पहुंचकर ही बच सकूंगा इनसे।

खूब बधाइयां मिलीं शूतान व वेणु को -

बधाई हो शूतान!

बधाई

बधाई

विक्रमनगर में निकली शूतान व वेणु की सवारी -

बधाई

बधाई

सबने की उनके सुखमय विवाहित जीवन की कामना।

प्रिय पाठक मित्रो!

वेणु, वृंदावनिया से हो गई शूतान की शादी। कैसा लगा आपको यह नया किरदार और कैसी लगी यह कहानी? इस विषय में पत्रों द्वारा अवश्य अवगत कराएं। आपके अमूल्य पत्र पहले भी मेरा भरपूर मार्ग दर्शन करते रहे हैं। अगली चित्रकथा "शैतान बुड्ढे" है, जिसमें आपको ले जा रहा हूं भुजंगदेश, जहां अतिक्रूर, पीकू पकोड़िया व भोकाल की तीन शैतान बुड्ढों से होगी एक अति रोमांचक जंग और उसके बाद प्रकाशित होगा भोकाल का चिर-प्रतिक्षित राज कॉमिक्स विशेषांक— "भोकाल की तलवार"

आपका: संजय गुप्ता